B.Com.(HONS)
P1 — A/cs & finance (H)
Paper- I.
Financial Accounting
Date-27.05.2020

प्रो० धनंजय कुमार
सहायक प्राध्यापक
वाणिज्य विभाग
V.S.J. महाविद्यालय
राजनगर (मधुबनी)

UNIT- I
TOPIC - ACCOUNTING CYCLE

LEDGER

जैसा कि JOURNAL में हमने देखा कि वित्तीय प्रकृति के व्यापारिक सौदों का लेखा सर्वप्रथम मौलिक लेखे की पुस्तकों में की जाती है. ये पुस्तकें रोकड़, क्रय व विक्रय तथा क्रय वापसी व विक्रय वापसी एवं प्राप्य व देय बहियों आदि होती है. व्यवसाय के मालिक को इन बहियों द्वारा प्राप्त सूचनाओं के अतिरिक्त प्रत्येक देनदारों, लेनदारों, संपत्ति, व्यय एवं आगम आदि के बारे में तुरंत सूचनाओं की आवश्यकता होती है. ये सूचनाएँ तुरंत तभी प्राप्त हो सकता है, जबकि इस व्यवसाय की प्रत्येक मद का विशेष रूप से अलग खाता रखे हों. अतः किसी मद विशेष से संबंधित समस्त सूचनाओं को एकत्र करना और उन्हें एक ही शीर्षक के अंतर्गत प्रस्तुत करना खाता बही (Ledger) कहलाता है.

इस प्रकार खाता बही उस बही को कहा जाता है जिसमें प्रत्येक संपत्ति, दायित्व, आय, व्यय, व्यक्ति एवं संस्था से संबंधित सूचनाएँ अलग-2 उनके खातों में होती हैं: कुछ विद्वानों द्वारा इसे निम्न प्रकार से परिभाषित किया गया है:—

★ जे० आर० बाटलीबॉय के अनुसार — "लेखा पुस्तकों में खाता बही एक प्रमुख पुस्तक है और अंत में इसी पुस्तक में समस्त व्यापारिक सौदों को वर्गीकृत रूप से यथास्थान, उसे संबंधित खातों में किया जाता है."

Scanned with CamScanner

एल० सी० कॉपर के अनुसार — "वैसी पुस्तक जिसमें एक व्यापारी के सौदों को वर्गीकृत करके स्थायी रूप में लिखा जाता है उसे खाता बही कहा जाता है।"

विलियम पिकिल्स के अनुसार — "खाता बही एक ऐसी पुस्तक है जिसमें व्यवसाय के सभी व्यक्तिगत, वास्तविक एवं नाममात्र के खाते स्थायी रूप से रखे जाते हैं ताकि किसी भी खाते की स्थिति का पता आसानी से लगाया जा सके।"

उपरोक्त परिभाषाओं एवं तथ्यों से खाता बही वास्तव में लेखा पुस्तकों में प्रधान खाता बही होता है जिससे व्यक्तिगत खाता, वास्तविक खाता एवं नाममात्र खाता से संबंधित सभी खातों की अलग-2 एवं पूर्ण जानकारी प्राप्त होती है।

— : खाता बही की विशेषता : —

(i) व्यवसाय की प्रधान बही होना।

(ii) प्रत्येक खातों का अंतिम शेष आसानी से प्राप्त होना

(iii) एक ही प्रकृति के विभिन्न सौदों का सारांश प्रस्तुत करना।

(iv) तलपट का निर्माण करने में सहायक होना।

(v) एक ही मद से संबंधित लेन-देनों की पूर्ण एवं विस्तृत जानकारी प्रदान करना।

— : खाता बही के लाभ (ADVANTAGES OF LEDGER) : —

खाता-बही व्यावसायिक लेखांकन की एक प्रमुख प्रलेख है। समस्त व्यावसायिक लेनदेन का लेखा रोजनामचा, रोकड़ बही व सहायक बहियों में करने के पश्चात् खाता-बहियों में करना आवश्यक होता है। अतः इसकी उपयोगिता को निम्न प्रकार से स्पष्ट किया गया है: —

(i) भिन्न खाते (Separate Account) का होना — अर्थात् विभिन्न मदों और पक्षों के विभिन्न खाते-बही होते हैं जिससे खाता विशेष से

Scanned with CamScanner

संबंधित सूचनाएँ एक ही स्थान पर प्राप्त की जाती है उदाहरणस्वरूप यदि Ram का ledger बना रहे है तो Ram से संबंधित सभी सूचनाएँ जैसे. क्रय, विक्रय, प्राप्ति व भुगतान का लेखा रामके खाते में ही किया जाएगा.

(ii) <u>आवश्यक सूचना एक ही स्थान में प्राप्त होना</u> — अर्थात् प्रत्येक खाते से संबंधित सूचनाएँ एवं उस व्यक्ति की वास्तविक स्थिति की जानकारी उसके ledger खातों से प्राप्त हो सकती है. क्रय-विक्रय, क्रय व विक्रय वापसी, जमा देना व जमा लेना आदि की सूचनाएँ तुरंत उपलब्ध हो जाती है.

(iii) <u>तलपट बनाने में सहायक होना</u> :— खाता-बही के सहायता से तलपट का निर्माण करना आसान होता है. यह मुख्यतः ledger के शेषों के द्वारा तैयार किया जाता है, परिणामतः लेखांकन की गणितीय शुद्धता की जाँच भी हो जाती है.

(iv) <u>अंतिमखाते बनाने में सहायक होना</u> :— लेखांकन वर्ष के अंत में अंतिम खाते अर्थात् Trading Account, Profit & Loss A/c तथा Balance sheet खाता बही के आधार पर ही बनाये जाते हैं. जिससे शुद्धलाभ या हानि तथा वित्तीय स्थिति की जानकारी प्राप्त होती है. साथ ही साथ समायोजनाओं के बारे में भी सूचना प्राप्त होती है.

(v) Journal की कमियों को दूर करने में सहायक होना :— Journal से आवश्यक व संक्षिप्त जानकारी आसानी से प्राप्त नहीं होती है. अतः इस कमी को दूर करने में खाता बही अधिक उपयोगी साबित हुआ है.

FORMAT OF LEDGER ACCOUNT

Name of Account. Page no.

Dr. Cr.

Date	Particulars	J/F	Amount ₹	Date	Particulars	J/F	Amount ₹
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	8
	To ..... A/C				By ..... A/C		

J/F = Journal folio.

Difference between Journal and ledger.

आधार	JOURNAL (रोजनामचा)	LEDGER (खाता बही)
1. प्रारंभिक लेखा	यह व्यवसायिक लेनदेनों एवं घटनाओं की प्रारंभिक लेखा पुस्तक है.	जबकि यह व्यवसायिक लेनदेनों की प्रारंभिक लेखा पुस्तक नहीं; बल्कि प्रधान लेखा पुस्तक है.
2. सूचना	इसमें विभिन्न खातों से संबंधित सूचनाएँ एक साथ लिखी जाती है.	जबकि इसमें खाता विशेष से संबंधित सूचना एक जगह लिखी जाती है.
3. आधार	इसके आधार पर ledger बनायी जाती है.	जबकि इसके आधार पर Trial Balance बनायी जाती है.
4. अनिवार्यता	इसके आधार final Account नहीं बनाये जा सकते है.	जबकि इसकी उपलब्धता से, इसके आधार पर final Account बनाया जाता है.
5. कथन (Narration)	इसके अंतर्गत प्रत्येक लेनदेन का ब्यौरा लिखना आवश्यक होता है.	जबकि इसमें लेन-देनों का ब्यौरा लिखना आवश्यक नहीं होता है.
6. स्थायित्व	यह अस्थायी अभिलेख होता है क्योंकि इन्हें रद्दी में Posting किया जाता है.	जबकि यह स्थायी अभिलेख होता है, क्योंकि यह अंतिम प्रविष्टि होता है.

Scanned with CamScanner